

लकड़ी-लोहे-कागज-प्लास्टिक की आई बारी



UNDER MOBILE LEARNING RESOURCE CENTER PROJECT
Innovative Educational Engagement for Children



यूनिसेफ एवं विहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना के सहयोग से
रोहिणी साइंस क्लब द्वारा संचालित प्रोजेक्ट के तहत विकसित

COVID-19 कोरोना वायरस महामारी के प्रकोप के कारण मार्च 2020 से स्कूल बंद हैं। इस दौरान बच्चे घर पर हैं और इनकी पढ़ाई का ख्याल रखते हुए सरकार ने डिजिटल कंटेंट तैयार कर दूरदर्शन के माध्यम से लगातार प्रसारित करने की कोशिश की है। इस दौरान WhatsApp जैसे सोशल मिडिया प्लेटफार्म का भी बच्चों की पढ़ाई के लिए प्रयोग में लाया गया।

इस दिशा में किये गए प्रारंभिक प्रयासों ने कुछ उम्मीद बांधी है। इससे बच्चों में “सीखने” के प्रति दिलचस्पी बढ़ी है जो उनके ज्ञानवर्धन में भविष्य में सहायक भी हो सकता है। इस क्रम में एक नई सम्भावना जो दिख रही है वह है “थीम बेस्ड लर्निंग” अर्थात् “घर पर रहकर सीखना”। हम सभी जानते हैं कि बच्चे घर पर हो या स्कूल में, वे हमेशा कुछ न कुछ सीखते जरूर हैं। जो बच्चे घर पर रहकर इन दिनों करीब से घर की सम्पूर्ण गतिविधियों को देख रहे हैं – उनके लिए “घर” कुछ नया सीखने के लिए बेशुमार अवसर देता है। इसी विषयवस्तु को लेकर एक पाठ्यक्रम तैयार किया गया है जिसके अंतर्गत दस थीम (विषयवस्तु) का चयन किया गया है जिसके सम्बन्ध में विस्तार से अलग-अलग थीम पुस्तिकाओं में आप शैक्षिक सामग्री देख सकेंगे।

हमारी कुछ भ्रातियाँ भी है जिसे स्पष्ट करना जरूरी है।

- ➔ COVID में स्कूल बंद है तो क्या बच्चों का ‘सीखना’ भी बंद है? जी नहीं। बच्चे घर पर रहकर भी बहुत कुछ सीख सकते हैं।
 - ➔ घर पर किताब-कॉपी लेकर बच्चे नहीं बैठे हैं इसलिए ‘सीखना’ संभव नहीं है। यह बात भी सही नहीं है। सीखने के लिए हमेशा किताब व कॉपी को होना जरूरी नहीं है।
 - ➔ खेलते बच्चे, सिर्फ खेलते हैं, सीखते कुछ नहीं, यह भी बात सही नहीं है। खेलते हुए भी बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं जो उनके जीवन में काम आता है, जैसे – टीम भावना से खेलना, हार को स्वीकार करना, चुनौती लेना आदि।
 - ➔ गीत गाते, नाचते-कूदते, दौड़-भाग करते, बच्चे कुछ सीखते नहीं हैं, यह बात भी सही नहीं है। खेलने-कूदने से बच्चों में शारीरिक चपलता और स्फूर्ति पैदा होती है जो तंदरुस्त और खुशामिजाजी बने रहने में सहायक होता है।
- इसलिए कहा जाता है – सीखना एक जन्मजात प्रवृत्ति है। हम कहीं भी रहकर सीख सकते हैं। हर परिस्थिति से कुछ सीख सकते हैं। हाँ, स्कूली पाठ्यक्रम से इसका कितना अंश जुड़ा है यह तय करने की हमें जरूरत है।

प्रश्नोत्तर

1. आपके घर के कबाड़ में किस चीज की भरमार आप देखते हैं? बताएं।
2. प्लास्टिक बैग का आप क्या करते हैं? बताएं।
3. इन चीजों को गर्म करने पर क्या होता होगा? जैसे—लोहा, कागज, लकड़ी, प्लास्टिक, पानी और कपड़ा।
4. आपके घर में सबसे पुराने लकड़ी व प्लास्टिक के किसी चीज को खोजे और पता लगाएँ उस समय उसकी कीमत क्या थी और आज क्या है? कितने % की वृद्धि / कमी हुई है?
5. क्या कागज के दोने में पानी गर्म किया जा सकता है? कारण के साथ जबाब बताएं।
6. आपके घर में पायी जाने वाली लकड़ी, लोहे, कागज, कपड़ा और प्लास्टिक के चीजों की सूची बनायें और बताएं किस चीज की बनी चीजें ज्यादा संख्या में आपके घर में हैं?
7. आपके घर की उन चीजों का नाम लिखें जो अलग-अलग समय में प्रयोग में लाया जाता है?

प्रतिदिन	साप्ताहिक	मासिक	अर्द्धवार्षिक	वार्षिक
----------	-----------	-------	---------------	---------

8. कुछ चीजों का रूप बदला है। नीचे दिये गये चीज आज किस रूप में मिलते हैं?

वस्तुएँ	पहले	आज
जूता-चप्पल		
थाली		
बाल्टी		
खिलौना		
बोरा		

थीम बेस्ड लर्निंग

‘थीम बेस्ड लर्निंग’ के अंतर्गत हम यहाँ उन विषयों को ले रहे हैं जो हमारे घर और दैनिक क्रियाकलापों एवं गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। इसके माध्यम से बच्चों को उनकी रचनात्मकता और विचारों का बेहतर उपयोग करने का अवसर मिलता है। बच्चों में इस दौरान चीजों को एक नई दृष्टि से देखने, उसमें नवीनता की खोज करने, उनको मूर्त रूप देने, डिजाइन करने के साथ-साथ उससे सम्बंधित सामग्री को पढ़ने व उस विषय पर लिखने जैसी एक नई प्रवृत्ति के पनपने की भी सम्भावना है। आगे चलकर इस सीख को बच्चे अपने समुदाय व स्कूल में प्रस्तुत भी कर सकेंगे। हम अपने घर की सभी गतिविधियों को अगर गौर से देखे तो पाएंगे कि उसमें ढेर सारी सीखने की सम्भावना है। जो बच्चे घर पर रहकर इन दिनों करीब से यह सब कुछ देख रहे हैं, बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं एवं अपने परिवारजनों को मदद भी कर रहे हैं— उनके लिए “घर” सीखने के बेशुमार अवसर देता है। घर की गतिविधियों पर अगर हम एक नजर डालते हैं तो देखते हैं कि वहाँ — भोजन की व्यवस्था, साफ-सफाई, नहाना-धोना, कपड़े साफ करना, छोटे बच्चों की देख-रेख, बाजार का काम, पशुओं की देख-रेख, कृषि कार्य, जैसे बहुत से काम होते हैं।

बच्चे अपने आस-पास के वातावरण से बहुत कुछ सीखते हैं। कभी देखकर, कभी अनुसरण कर, कभी बोलकर, कभी सुनकर, कभी अभ्यास कर तो कभी उपयोग कर आदि। कई तरीकों से बच्चे सीखते रहते हैं। लोगों से अंतःक्रिया कर अपने अनुभवों के आधार पर वह समझदारी हासिल करते हैं। सीखने की यह प्रक्रिया उनके व्यवहार में परिवर्तन के पूर्व होती है। इसलिए कहते हैं ‘सीखना’ बार-बार अभ्यास का परिणाम है।

आज COVID-19 महामारी की स्थिति के कारण, घर पर लंबे समय तक रह गए बच्चों की रुचि और उनकी मानसिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए इन सामग्रियों को तैयार करने की कोशिश की गई है। बच्चों को मौजूदा हालातों में खुश रहने, खेलने-कूदने के साथ-साथ पढाई में भी रुचि पैदा करने के लिए यह एक जरिया बन सकता है।



आइये, देखते हैं सीखने के लिए क्या-क्या जरूरी है :-

- बच्चे उस वातावरण में बेहतर सीखते हैं जब उन्हें लगता है कि वे महत्वपूर्ण हैं।
- बच्चे सक्रिय भागीदारी से सीखते हैं।
- बच्चे स्वयं प्रयोग करते हुए सीखते हैं।
- बच्चे बातचीत, अंतःक्रिया और विवेचना से सीखते हैं।
- बच्चे अपने अनुभवों से सीखते हैं।
- बच्चे पूर्वज्ञान के साथ जोड़कर सीखते हैं।
- बच्चे सवाल पूछ कर, जाँच-परख कर सीखते हैं।

हम सभी जानते हैं कि सीखना अपने आप में एक सक्रिय व सामाजिक गतिविधि है। कैसे सीखना है, यह भी एक सीख है (Learning to Learn) बच्चे सीखने के क्रम में तब सीखेंगे जब :-

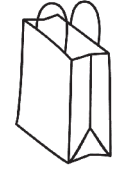
- बच्चे चिंतनशील बनेंगे।
- बच्चे खोजी प्रवृत्ति के बनेंगे।
- बच्चे सृजनशील कार्य में रुचि लेंगे।
- नए कार्यों को करके आजमाएंगे।
- जोड़-तोड़ कर समस्या का हल निकालना सीखेंगे।
- अपनी गलतियाँ खुद सुधारेंगे।
- गलती के डर से पहल नहीं करना, जैसी मानसिकता से उभरेंगे।
- असफलताओं से ही सफलता की कहानी लिखी जाती है, यह जानेंगे।

होम बेस्ड लर्निंग, शिक्षकों को भी स्कूल के बच्चों के संरक्षक के रूप में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करेगा ताकि वे बेहतर सीख के साथ कल जब स्कूल खुलेंगे तब अपना कक्षा विनिमयन कर सकेंगे। इसी प्रकार माता-पिता और अभिभावक भी होम बेस्ड लर्निंग की अवधारणा को बच्चों की आवश्यकता और आकांक्षाओं से जोड़ कर देख सकेंगे। उम्मीद है कि वे बच्चों को घरों में एक बेहतर 'सीखने का माहौल' देने में सक्षम होंगे जिससे परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बच्चों का एक अच्छा तालमेल बना रहे।



बात बढ़ाओं आगे!

- यह कैरी बैग है।
- यह कागज का कैरी बैग है।
- यह मेरा कागज का कैरी बैग है।
- यह मेरा बनाया कागज का कैरी बैग है।
- यह। आगे क्या?



आप भी कुछ ऐसा सोचें!

- यह बाल्टी है।
- यह लोहे की बाल्टी है।
- आगे? क्या



लोहा और लकड़ी की दोस्ती

एक समय की बात है। नदी के किनारे एक लोहा बहुत दिनों से पड़ा था। एक दिन उसे लगा कि नदी के पार क्या है, चलकर देखना चाहिए। वह नदी में जैसे ही गया, डूबने लगा। इतने में लकड़ी का टुकड़ा उसके पास आ पहुँचा। लोहे ने कहा भाई मुझे नदी के उस पार जाना था पर मैं तो डूब जा रहा हूँ। कैसे जाएँ? समझ में नहीं आता। लकड़ी ने कहा अरे! इसमें समझने की क्या बात है आओ बैठ जाओ मेरे पीठ पर। मैं तुम्हें उस पार ले चलता हूँ। लोहा लकड़ी पर बैठ गया लकड़ी झट-पट उसे नदी के उस पार लेकर चला गया। लोहे ने लकड़ी की इस मदद के लिए उसे बहुत धन्यवाद दिया।

प्रश्न 1— किन-किन सामानों को लकड़ी के पीठ पर बैठाकर नदी के उसपार आप भोजना चाहेगें?

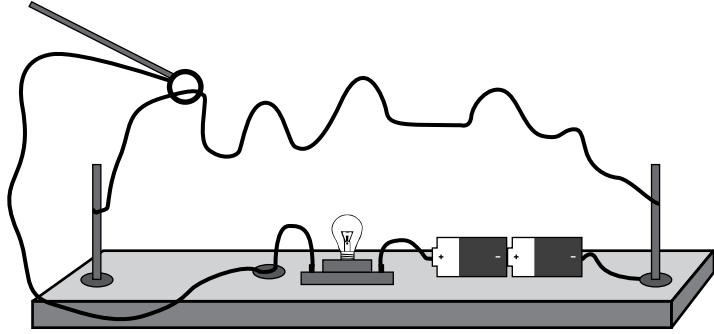
लोहे से बनी वस्तु	प्लास्टिक से बनी वस्तु	कागज से बनी वस्तु	लकड़ी से बनी वस्तु





हाथ का संतुलन

एक लोहे के तार को वक्रानुसार (टेढ़ा-मेढ़ा) मोड़कर एक संतुलन मीटर बनाया जा सकता है। तार में एक तार का ही बना छल्ला डालकर उसे एक बैटरी परिपथ से चित्रानुसार जोड़ देते हैं। जैसे ही छल्ला, तार से सट जायेगा, बजर आवाज करने लगेगा। छल्ले को सावधानी से तार के एक छोर से दूसरे छोर तक पार करना ही आपके संतुलन को प्रदर्शित करता है।



जानियें

चापाकल का पानी ऊपर कैसे आता है?

आपने साइकिल के पम्प का अवश्य ही इस्तेमाल किया होगा। जिस तरह हैंडल से पम्प मारने पर उसके पिस्टन के दबाव से हवा निकलकर साइकिल के ट्यूब तक पहुँच जाती है वैसे ही प्रक्रिया चापाकल में भी होती है। हैंडल चलाने पर पानी नीचे से ऊपर उठता जाता है। इन दोनों ही चीजों में एक चीज है जो हवा या पानी को एक ही दिशा में जाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और वह चीज है "वाल्व" जी हाँ! साइकिल में यह ट्यूब के हवा को वापस पम्प में आने से रोकती है और चापाकल में भी नीचे से ऊपर आये पानी को "वाल्व" वापस नीचे जाने से रोकता है। पता लगाएं और कहाँ-कहाँ "वाल्व" का प्रयोग होता है।



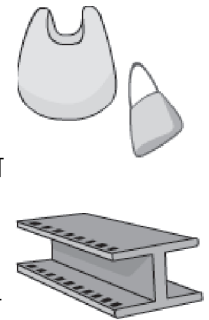
लकड़ी-लोहे-कागज-प्लास्टिक की आई बारी

हर घर में हमें लकड़ी, लोहा, कागज, प्लास्टिक से बनी कई चीजें दिख जाती हैं। लेकिन ये कहाँ से आती हैं? कैसे बनती हैं? कौन इसे बनाता है? और किस कीमत पर यह हमारे घरों में प्रवेश करती है? ये सभी कुछ प्रश्न हैं जिनका हम सबको मिलजुल कर जबाब ढूँढ़ना चाहिए। हर चीज की अपनी पहचान, अपना गौरव और अपनी सीमायें हैं। लोहे की जगह लकड़ी इस्तेमाल नहीं हो सकता, लकड़ी की जगह कागज इस्तेमाल नहीं कर सकते आदि। हाँ, विकल्प कई चीजों का है जैसे पहले लकड़ी के टेबल-कुर्सी बनते थे आज वह प्लास्टिक का मिलने लगा है। इन सब के बीच हमें यह भी देखना चाहिए कि कहीं हम प्रकृति को नष्ट कर बड़ी कीमत तो नहीं चुका रहे हैं? हमें इन सब बातों पर गौर करते हुए इस विषयवस्तु का अध्ययन करना चाहिये। आइये, आज हम इन्हीं विषयों के इर्द-गिर्द रहकर अपनी बातचीत करेंगे। बातचीत के साथ-साथ कुछ काम भी करेंगे जिससे आप के अंदर विषयवस्तु की समझ बढ़ेगी और नये कौशल से आप समृद्ध होंगे।

गीत/कविता

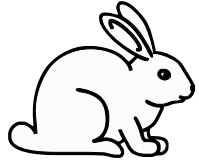
मेलजोल

दिख जाता है मेरे घर में।
प्लास्टिक, लकड़ी, लोहा, कागज
हर चीज बनती इनसे है
घर में रहती है यह सजधज
किसी को किसी से बैर नहीं
मिलजुल कर सभी रहते हैं
एक थक जाता दूसरा आता
सुख-दुख: मिलकर सहते हैं।



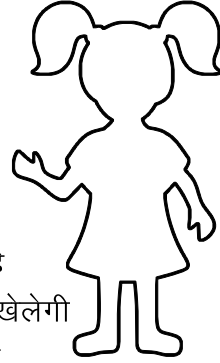
कागज की गुड़िया

कागज की गुड़िया को आँख नहीं है
गुड़िया कैसे देखेगी, गुड़िया कैसे देखेगी?
उल्लू के आँख लगाकर ऐसे देखेगी



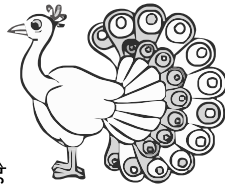
कागज की गुड़िया को कान नहीं है
गुड़िया कैसे सुनेगी, गुड़िया कैसे सुनेगी
खरगोश के कान लगाकर ऐसे सुनेगी

कागज की गुड़िया को दाँत नहीं है
गुड़िया कैसे खायेगी, गुड़िया कैसे खायेगी
शेर के दाँत लगाकर ऐसे खायेगी



कागज की गुड़िया को हाथ नहीं है
गुड़िया कैसे खेलेगी, गुड़िया कैसे खेलेगी
स्त्रींग के हाथ लगाकर ऐसे खेलेगी

कागज की गुड़िया को पैर नहीं है
गुड़िया कैसे चलेगी, गुड़िया कैसे चलेगी
सारस के पैर लगाकर ऐसे चलेगी

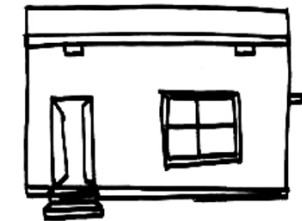
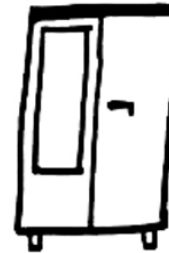
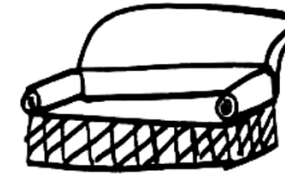


कागज की गुड़िया को पंख नहीं है
गुड़िया कैसे नाचेगी, गुड़िया कैसे नाचेगी
मोर के पंख लगाकर ऐसे नाचेगी

खेल

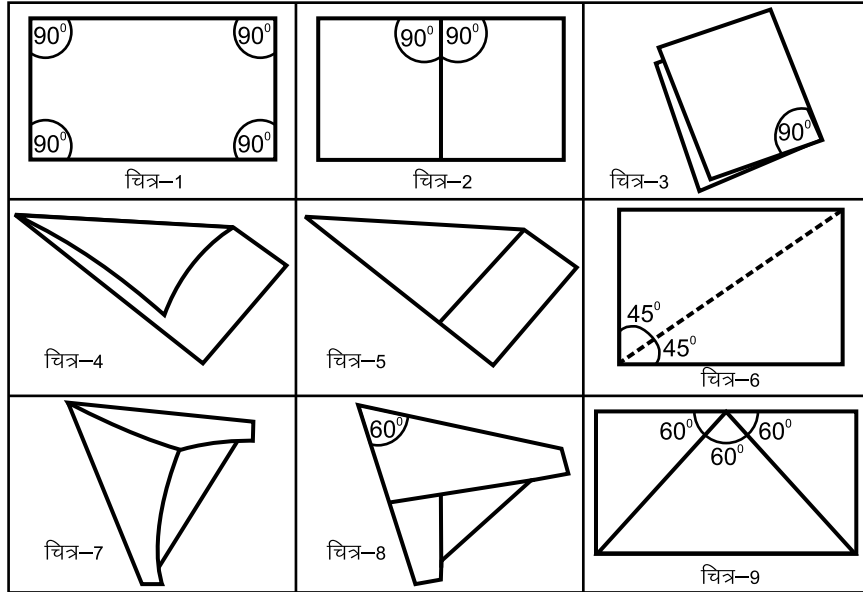
सामने रखी चीजों में ढूँढ़ें क्या है गोल, क्या है चौकोर

बच्चों गोल घेरे में खड़े हो जाएँ और कोई एक बच्चा इस गतिविधि को यह कहते हुए शुरू करवाएगा—“क्या है गोल, क्या है चौकोर” जल्दी बोल, जल्दी बोल और बोलेगा “किताब है चौकोर, चूड़ी है गोल” साथ में सभी बच्चे दोहराएंगे और बोलेंगे कि “किताब है चौकोर, चूड़ी है गोल”। इसके बाद गतिविधि करवाने वाला बच्चा किसी एक बच्चे के पास जाएगा और बोलेगा क्या है चौकोर, क्या है गोल” जल्दी बोल, जल्दी बोल। उस बच्चे को एकदम से किसी एक चौकोर या एक गोल वस्तु का नाम लेना होगा, जैसे—उसका उत्तर हो सकता है—बरफी चौकोर, लड्डू गोल। यदि कोई बच्चा नहीं बता पाए, तो सभी बच्चे मिलकर उसे कुछ भी अभिनय करने या गाना गाने को कहेंगे। इस तरह यह गतिविधि आगे चलती रहेगी।



कागज से ज्यामिति

अगर हम एक सादे पन्ने को देखें तो हमें वह सपाट दिखता है, पर इसमें कई रेखाएँ छिपी है। आईए उनको देखें। शुरुआत सरल कोणों से करते हैं। 90 डिग्री का कोण तो आसान है क्योंकि कॉपी / किताबों के सभी कोण 90 डिग्री के होते हैं। पन्ने के किनारे की सीधी धार 180 डिग्री की होती है इसे प्रत्यक्ष देखने के लिए पन्ने को दो बराबर भागों में मोड़ते हैं। मोड़ के दोनों ओर 90 डिग्री का कोण बनता है। अब 45 डिग्री का कोण तो आसान है। पन्ने के किसी एक कोने को दो बराबर भाग में मोड़ देने पर 45 डिग्री का कोण बन जाता है। अब 60 डिग्री का कोण कैसे मोड़ेंगे। यह भी काफी सरल है। कागज का किनारा यानि 180 डिग्री के कोण को तीन बराबर खण्डों में बाँट देते हैं। इसके लिए किनारे के बीचों बीच एक बिन्दु चुनते हैं। इस बिन्दु के दोनों ओर के किनारों को लगभग 60 डिग्री के कोण में मोड़ते हैं। मोड़ने से पहले यह ध्यान रखते हैं कि दोनों ओर की किनारे पन्ने के मोड़ों पर एकदम जमकर बैठ जाएं। इस तरह हम देखते हैं कि सरल कोण तीन बराबर भागों में बाँट गया है।



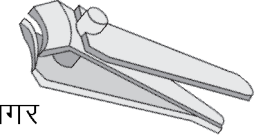
एक खबर

लाये हैं एक खबर
ले ले कैंची, नेलकटर

नाखुन हैं जो बढ़े हुए
मैल हो जिनमें जमे हुए।

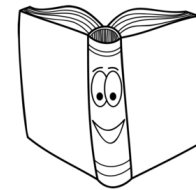
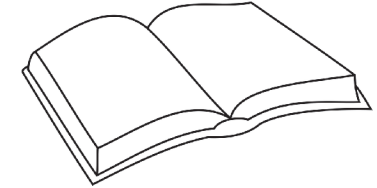
कभी न उनमें दाँत लगाएँ
पास न उनको मुँह के लाएँ

करें नाखुन हम साफ मगर
ले लें कैंची, नेलकटर



किताबें करती है बातें

किताबें करती है बातें,
बीते जमाने की
दुनिया की, इंसानों की
आज की और कल की
एक एक पल की
किताबें करती है बातें
बीते जमाने की



खुशियों की, गमों की
फूलों की, बमों की
जीत की, हार की
प्यार की, मार की
क्या तुम नहीं सुनोगे, इन किताबों की बातें?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं

पहेली

1. लोहे का है मेरा आँगन।
लोहे के दो कान।।
पुड़ी, कचौरी मन भावन।
तलवाऊँ पकवान।। (३।३।३)

2. पीता हूँ मिट्टी का तेल।
हवा-हवा से करता खेल।।
सर-सर मैं जल जाता हूँ।
गरम-गरम अन्न पकाता हूँ।। (३।३।३)

3. दो पैरों पर खड़ी कहाऊँ।
चार पैर पर पड़ी कहाऊँ।।
जो देखे उसके मन भाऊँ।
इच्छा होती झट सो जाऊँ।। (३।३।३)

4. ले दाँतों की बड़ी कतार,
सिर पर नाचे काठ कहार,
उसके बिना न रहती नारी,
एक अचंभा है यह भारी। (३।३।३)

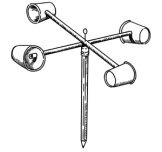
5. लोहे का बना हूँ।
जमीन में गड़ा हूँ।।
पूँछ के दबाने से।
प्यास मैं बुझाता हूँ।। (३।३।३)

घर में स्थित छोटी छोटी चीजे जैसे-चम्मच, ढक्कन, रबर बैंड, पेंसिल, रबर, दोना-पत्तल, दूध का पाउच, सिक्का आदि को पानी से भरे बाल्टी में डाले और देखें कौन तैरता है और कौन नहीं।

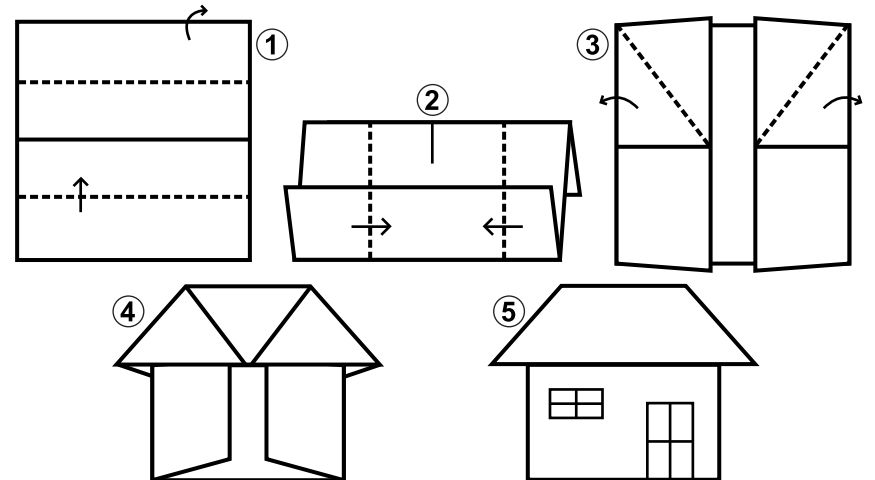
सवाल: क्या आप किसी तैरती चीज को डूबा सकते हो और डूबती चीज को तैरा सकते हो। पहले करें फिर बताएं।

एक लोहे के नट-बोल्ट व कांटी में तांबे का तार लपेटकर एक बैटरी के धन एवं ऋण से उसके सिरों को जोड़ दें। नट-बोल्ट/कांटी में किस तरह का गुण आ गया, पता लगाएं। इस नट-बोल्ट/कांटी के नीचे पेपर पिन को रखें तो वह उससे सट जाता है। पहले बनाएं और फिर बताएं कि नट-बोल्ट व कांटी में किस तरह का गुण आ गया है?

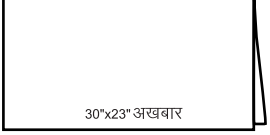
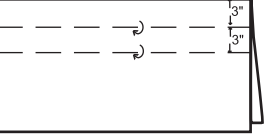
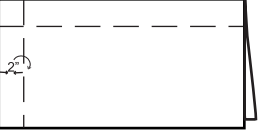
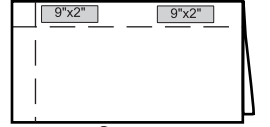
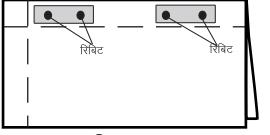
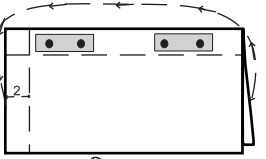
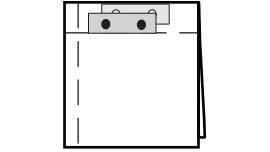
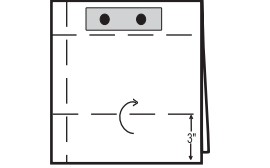
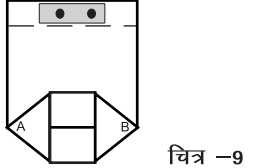
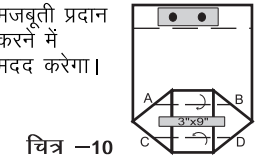
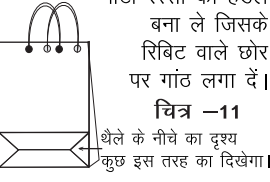

पेपर कप, आइस्क्रीम डंटी और पेंसिल की सहायता से हवा की गति का पता लगाने के लिए एक एनेमोमीटर का मॉडल बनाएं।



कागज मोड़कर घर बनाना



अखबार के कागज से थैला बनाने की विधि

<p>अखबार के दो खुले पन्नों को फेला कर एक दूसरे पर रखें।</p>  <p>30"x23" अखबार</p> <p>चित्र -1</p>	<p>दोनों अखबार के ऊपर के भाग को चित्रानुसार 3-3 इंच नाप कर दो बार ऊपर से अंदर की ओर मोड़ दें।</p>  <p>चित्र -2</p>	<p>अखबार के बांयी ओर के भाग को 2 इंच नाप कर अंदर की ओर चित्रानुसार मोड़ दें।</p>  <p>चित्र -3</p>
<p>यह थैले का ऊपरी भाग है जिसे अखबार के दो हिस्सों में नीचे दिखाया गया है। प्रत्येक भाग के बीचों-बीच एक कूट 9"x2" का गोंद से साट दें। साटने के बाद कागज को ऊपर से मोड़ देना है ताकि कूट दिखे नहीं।</p>  <p>चित्र -4</p>	<p>अखबार के ऊपरी भाग में जहाँ 9"x2" का कूट साटा गया है, वहाँ समान दूरी पर दो-दो रिबिट लगाएं।</p>  <p>चित्र -5</p>	<p>इसके बाद दाहिने ओर के अखबार को घुमाकर बांयी ओर के 2" मुड़े हुए भाग पर गोंद लगाकर साट दें।</p>  <p>चित्र -6</p>
<p>साटने के बाद थैले का दृश्य चित्रानुसार होगा जिसमें रस्सी का हैंडेल बनाने के लिए दो अलग-अलग 9"x2" की पट्टी पर 2-2 रिबिट लगे हुए मिलेंगे।</p>  <p>चित्र -7</p>	<p>उसके बाद नीचे की ओर से अखबार के दोनों हिस्सों को लेकर 3 इंच बाहर की ओर मोड़ें।</p>  <p>चित्र -8</p>	<p>नीचे के 3" मुड़े भाग को चित्रानुसार मोड़ें। इसके लिए A तथा B दोनों किनारों पर अखबार को दाबने पर चित्र जैसी स्थिति प्राप्त होगी।</p>  <p>चित्र -9</p>
<p>नीचे के चित्र से स्पष्ट है कि AB तथा CD को बाहर इस तरह मोड़ना है कि बीच में रखी 3"x9" की कूट की पट्टी से वे साट जाय जो थैले के धरातल को मजबूती प्रदान करने में मदद करेगा।</p>  <p>चित्र -10</p>	<p>नीचे की पट्टी ठीक से साट लिये जाने के बाद ऊपर की पट्टी में रिबिट के छेद को देखते हुए दो मोटी रस्सी को हैंडेल बना ले जिसके रिबिट वाले छोर पर गांठ लगा दें।</p>  <p>चित्र -11</p> <p>थैले के नीचे का दृश्य कुछ इस तरह का दिखेगा।</p>	<p>इस तरह अखबार का थैला बनकर आपके लिए तैयार हो गया है।</p>  <p>चित्र -12</p>

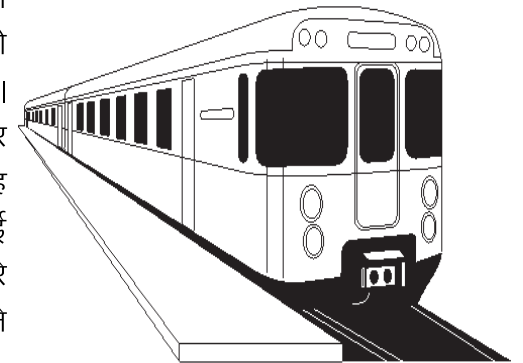
कहानी

रेल यात्रा

दशहरे की छुट्टियाँ आ रही थी। इन छुट्टियों को आगरा में बिताने का कार्यक्रम मेरे माता-पिता ने बना लिया। पिता जी ने आंध्रप्रदेश एक्सप्रेस में पन्द्रह दिन पूर्व ही आरक्षण करा लिया। अब हम उस दिन की प्रतीक्षा करने लगे जब हमें यात्रा करनी थी। रेल की लम्बी यात्रा को सोचते ही घबराहट होती थी। सिकन्दराबाद से आगरा बीस घंटे की यात्रा थी। माताजी ने सोचा कि यात्रा लम्बी है अतएव कुछ खाने पीने की सामग्री साथ रख लें। पर पिताजी बोले—रेल गाड़ी में खाना, नाश्ता, चाय, कॉफी सभी कुछ समय पर मिल जाता है। साथ कुछ भी ले चलने की आवश्यकता नहीं।

निश्चित तिथि को प्रातः काल हम लोग आंध्रप्रदेश एक्सप्रेस में सवार हो गए। गाड़ी ने भोपूँ बजाया और नियत समय पर चल दी। स्टेशन छोड़ते ही गाड़ी वेग से भागने लगी। खिड़की से बाहर देखने में आनन्द आने लगा। ऐसा लग रहा था मानों पेड़ पीछे की ओर भाग रहे हैं। खेतों की हरियाली मन को प्रसन्न कर रही थी। कोई नदी आती तो धड़-धड़ की आवाज करती उसके पुल को पार करती थी। स्टेशनों पर चाय काफी की आवाजें सुनाई देती थी। इडली और वड़ा, गरम

समोसे बेचने वाले आवाज लगाकर बेच रहे थे। कोई यात्री उतर रहे थे कोई चढ़ रहे थे। गाड़ी ने फिर भोपूँ बजाया और चल पड़ी। रास्ते में कई जगह पहाड़ों के सुन्दर दृश्य दिखाई दिए। उन पर खड़े हरे भरे जंगल, बहते हुए पानी के झरने





बहुत आकर्षक थे। कई गुफाओं से हमारी रेलगाड़ी गुजरी। दिन में अंधकार छा जाता था। फिर उजाला आ जाता था। पहाड़ी क्षेत्र समाप्त होने पर मैदान आ गए। मैदानों में ज्वार, बाजरे के खेत मन को मोह लेते थे। अब रात हो गई। मुझे नींद आने लगी थी। पिताजी ने एक शायिका खोल कर उस पर बिस्तर लगा दिया। मैं उस पर सो गया।

सवेरा हुआ तो माता जी मुझे जगा रही थी—कह रही थी उठो सवेरा हो गया। आगरा आ रहा है। मैं हड़बड़ा कर उठा और उतरने की तैयारी करने लगा। तब तक आगरा भी आ गया। हम लोग रेल से उतर गए।

आइये अब कुछ प्रश्नों का जवाब सोचिये।

1. रेल में कौन-कौन सी चीजे लकड़ी और लोहे की आपने देखी है? अनुमान से दोनों का प्रतिशत (%) बताएं।
2. बेचने वालों में कितने लोगों ने सफाई और स्वच्छता का ध्यान रखा?
3. प्लास्टिक का किस तरह का इस्तेमाल पूरे सफर के दौरान आपने देखा?

कागज ने दिया सबक

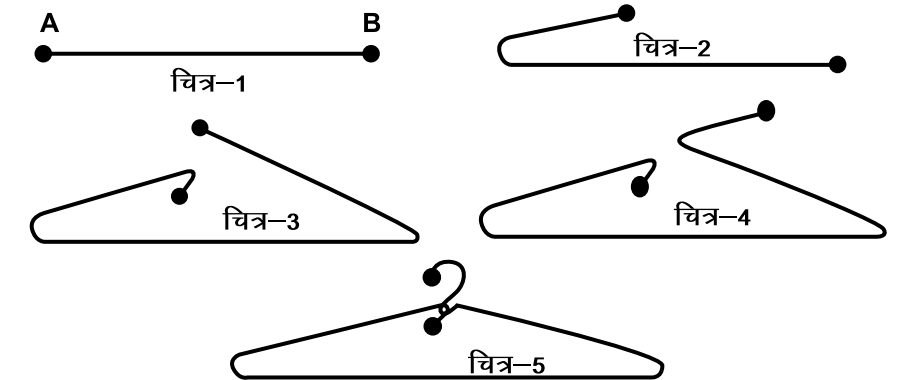
कुछ साल पहले की बात है। एक लड़का था जो कागज को बड़ा बर्बाद करता था। वह कागज को फाड़कर उसके टुकड़े कर देता था और उड़ाता था। कागज के एक ही तरफ लिखता था। उसको पानी, पेड़ वातावरण और बिजली की भी कोई कदर नहीं थी। उसके माँ-बाप उसको मना करते थे और वह रोज उनसे वादा करता, परन्तु उसके अगले ही दिन वह फिर से वही काम करता था। तो धरती माँ को गुस्सा आया और उन्होंने एक रात उसको सपना दिखाया कि वह कागज फाड़ रहा है और अचानक एक कागज उठा और बोलने लगा कि, “तुम हमें बड़ा तंग करते हो, हम जा रह हैं तुम्हारी दुनिया से”। सारे कागज धीरे-धीरे संसार से चले गये। तभी आवाज आई “रामू रामू नीचे आओ” (उस लड़के का नाम रामू था) वह नीचे की ओर भागा। उसने देखा कि उसकी माँ बिस्तर पर



लेटी है और बापू अलमारी से पैसे निकाल रहे हैं। थोड़ी देर में वह रामू को पैसे देकर कहते हैं कि “जा डॉक्टर के पास जाकर कह कि मेरी माँ को 103 डिग्री बुखार उलटियाँ पर उलटियाँ हो रही हैं, बताइये मैं क्या करूँ?” रामू भागकर डॉक्टर के पास जाता है। वह कहते हैं— इस बीमारी के इलाज के लिए यह दवाई लानी पड़ेगी और डॉक्टर ने रामू को एक बड़ा नाम बताया, क्योंकि उनके पास कोई कागज नहीं था। रामू वहाँ से भागा जिससे वह कैमिस्ट तक पहुँचे सके। वह उस दवाई का नाम रास्ते भर बोले जा रहा था। तभी उसका पैर एक कार के टायर से टकराया और वह गिर पड़ा, उसके सिर से खून निकलने लगा तथा वह दवाई का नाम भी भूल गया। वह रोने लगा और तभी उसकी आँखें खुल गयीं। सच में उसकी आँखें खुल गयीं। तभी से यह प्रण किया कि वह कागज जैसी अमूल्य चीज को बर्बाद नहीं करेगा।

करके सीखें

एक लोहे का तार अगर आपको दे दिया जाय तो आप उससे क्या-क्या कर सकते हैं जो काम में भी आ जाए और उससे आपके कौशल में भी इजाफा हो। आइये पहले एक तार लेते हैं। यह तार बहुत पतला नहीं हो। इसका ध्यान रखें। तार 'A-B' लेकर चित्रानुसार मोड़ते हैं।



इस तरह से एक साधारण तार को 5 चरणों में मोड़कर आप हेंगर बना सकते हैं।

